




सलोकु ॥
पूरा प्रभु आराधिया
पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥24॥







असटपदी ॥


पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पारब्रह्मु निकटि करि पेखु ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥
आस अनित तिआगहु तरंग ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥
आपु छोडि बेनती करहु ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥





खेम कुसल सहज आनंद ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
गुन गोबिंद अम्रित रसु पीउ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥





उतम सलोक साध के बचन ॥

अमुलीक लाल एहि रतन ॥

सुनत कमावत होत उधार ॥

आपि तरै लोकह निसतार ॥

सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥

जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥

जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥

सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥


नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥





सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अम्रित नामु साधसंगि लैन ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥





प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥

सावधान एकागर चीत ॥

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥

जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥

सरब इच्छा ता की पूरन होइ ॥

प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥


सभ ते ऊच पाए असथानु ॥

बहुरि न होवै आवन जानु ॥


हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥

नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥






खेम सांति रिधि नव निधि ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
गिआनु स्नेसट ऊतम इसनानु ॥
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥





इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥





जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥
निरमल सोभा अम्रित ता की बानी ॥
एकु नामु मन माहि समानी ॥
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥
साध नाम निरमल ता के करम ॥
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

